तो ब्राह्मण बनने बिगर तुम बाप से वर्सा तो ले नहीं सके। हम सभी इतने ब्राह्मण बने हैं, कोई लालच तो होगी ना। इतने ढेर बच्चे तो किसके बनते नहीं हैं बच्चे। भले जिज्ञासु बनते हैं, फॉलोअर्स बनते हैं, पर "बाबा–3" कहने वाले नहीं रहते हैं। तो सबको समझाय तो सकते हो ना। देखो, बाप दो हुए ना– एक शिवबाबा, बेहद का बाबा, वो लौकिक बाबा। अभी बेहद बाबा से वर्सा कैसे मिले, निराकार है? तो प्रजापिता ब्रह्मा बाबा द्वारा देखो हम इतने सभी वर्सा ले रहे हैं। ये छोटी–सी बात है। ये उनको बुद्धि में उसी समय में बिठाना चाहिए। जो हो तुम सो तो अपना परिचय तो दो ना उनको। वो गाया हुआ है ना–सन शोज़ फादर। बाबा है, ये ब्रह्मा है। ये उनसे वर्सा देते(लेते) हैं देखो ये सूर्यवंशी घराने का और सो भी बिल्कुल सहज; क्योंकि हम सूर्यवंशी सतोप्रधान थे, सतयुग में थे, हम 84 जन्म लिया, तमोप्रधान बने (हैं) और फिर सतोप्रधान बनने से, योग लगाने से हम फिर स्वर्ग का मालिक बन सकते हैं। कोई खर्चे की बात नहीं है, मत्था खराब करने की बात नहीं, कुछ भी नहीं। भले धंधा करो, धोरी करो और सिर्फ ये ख्याल करो, आत्मा तमोप्रधान बननी है, दुनिया तमोप्रधान है और दुनिया सतोप्रधान थी तो हम भी सतोप्रधान थे। अभी सतोप्रधान बनने के लिए बाप को याद करने से स्वर्ग का वर्सा मिलेगा, और कोई तकलीफ थोड़े ही है। तो ये भी उनको समझा देने से बहुत अच्छा रहता है। ब्रह्माकुमार–कुमारियों का भी अर्थ तो समझे ना। नहीं तो समझ में ही नहीं आता है उनको। अपना परिचय तो देना चाहिए ना। नहीं तो 'ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ' पता नहीं क्या, ये कोई संस्था का नाम समझ लेते हैं। ...वो समझ नहीं सकते हैं। अगर तुम उनको ये समझाएगी– फैमिली है। ये कोई इंस्टीट्युशन या फिंस्टीट्युशन नहीं है, फैमिली है ये ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ का और वर्सा पाते हैं। तुम भी ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ बनो और बाप से वर्सा लो। उसमें कोई तकलीफ तो है नहीं। सिर्फ पवित्र बनना है और जो विकर्म किए हुए हैं जन्म–जन्मांतर, सो भस्म करनी है याद से। ये वही प्राचीन है। ये नॉलेज कोई नई नहीं, नई नॉलेज है। है भी बहुत सहज। अच्छा, आज कितना फिनिश किया है, दो! (किसी ने कहा– दो) ...कभी भी कोई आर्यसमाजी सभा में या ऐसे ही आ करके प्रश्न–उत्तर करे, तो उससे कभी भी प्रश्न–उत्तर नहीं करना है। पीछे चाहे आर्य समाजी हो, चाहे संन्यासी हो। बोलो, प्रश्न–उत्तर हम क्या करें! हमको बाबा कहते हैं, शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कि मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा और विकर्म विनाश हो जाएँगे, तुम कर्मातीत अवस्था को पाएँगे, पवित्र बन जाएँगे और पवित्र दुनिया का मालिक बन जाएँगे; क्योंकि ये राजयोग है। ...तो बाप से वर्सा ही मिलेगा और कल्प पहले भी वर्सा मिला था भारत को ये देवी–देवताओं की राजधानी का। सो फिर भी देवी–देवताओं की राजधानी का वर्सा मिल रहा है। सिर्फ बाप इतना ही दो अक्षर समझाते हैं कि देह सहित देह के सभी छोड़ मामेकम् याद करो, इस योगाग्नि से विकर्म विनाश हो जाएँगे, पवित्र बन जाएँगे। यहाँ रहना भी है

कमल फूल के समान पवित्र। पवित्र बनने से तुम पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे, श्रेष्ठाचारी दुनिया का मालिक बन जाएँगे। बस, हम ये जानते हैं। कि भक्ति तो ठीक है। हम जानते हैं कि ये भक्तिमार्ग है; परन्तु भक्तिमार्ग अभी पूरा होता है। अभी ज्ञानमार्ग (...)। हम राजयोग सीख रहे हैं भविष्य के लिए। ये वही गीता है, कोई दूसरी चीज़ न (...)। वही गीता के एपिसोड हैं, वही महाभारत की लड़ाई है। बस, जानते हैं। .....जास्ती कोई से बकवाद करने की कोई दरकार नहीं है। डिबेट करना या करना, टाइम वेस्ट फिर जाते हैं और ये सीधी बात है। ये वही बात है जो कल्प पहले बाप ने कही है कि मुझे याद करो। तो हम कोई साकार को, कोई मनुष्य मात्र को (...)। हम इस समय में मनुष्य मात्र को न बाप मानते हैं, न टीचर मानते हैं, न गुरु मानते हैं। बाप, बाप् भी है, टीचर भी है, गुरु भी है, तो हम उनकी शिक्षा पर चलते हैं। लौकिक तो संबंधी हैं; परन्तु वो जो परलौकिक संबंधी हैं, बाप–टीचर और गुरु, हम उनकी मत पर चलते हैं और ब्रह्मा की मत, ब्रह्मा द्वारा हमको ये (...) देखो ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हम ढेर–के–ढेर हैं। तो हमको पढ़ाने वाला कोई ब्रह्मा नहीं है। परमपिता परमात्मा, ज्ञान का सागर, पतित–पावन भी वही है। हम उसकी ही मानते हैं, दूसरा कोई भी शास्त्र की बातें हम उठाते ही नहीं हैं, मानते भी नहीं हैं। जब हमको ज्ञान सागर मिला तो हम शास्त्रों–वास्त्रों को क्या करेंगे! थोड़ा ही बोलना, जास्ती नहीं बोलना। भले उनको ये समझ भी आ जाए कि ये किस कायदे पर खड़े हैं। बोलो, हम सिवाय एक बाप के (...); क्योंकि बेहद के बाप के (...) दूसरा कोई को भी याद नहीं करते हैं। हमको हुकुम ही है कि अपन को आत्मा निश्चय कर मुझे याद करो। तो तुम्हारा विकर्म सब विनाश हो जाएगा। बस, उसी की मत पर हम चलते हैं। श्रीमत पर, श्रेष्ठ–ते–श्रेष्ठ मत पर हम चलते हैं। चलो बच्चे! (म्युज़िक बजा) ये जो गोल लॉकेट सस्ते बन रहे (हैं), वो बस पॉकेट में पड़े ही रहें हमेश(ा)। बस, अभी ये बात है हमारे पास। ये बाबा है, ये दादा है। बाबा इस द्वारा हमको राजयोग पढ़ा रहे हैं। हमको भविष्य (में) ये बनने का है और दूसरी बात हम सुनते नहीं हैं। शंकर द्वारा विनाश होने का है। ये वही लड़ाई खड़ी है। हम पतित से पावन, तमोप्रधान से सतोप्रधान ऐसे बनते। बाबा कहते हैं कि मुझे याद करो तो तमोप्रधान से फिर से सतोप्रधान बन जाओ। वो सबके पास, जैसे वो संन्यासियों के पास बाइबिल रहता है ना, उनके नन्स के पास, तैसे तुम्हारे पास गीता पॉकेट में। ये गीता है तुम लोग की। वो बन जाएँ। बन जाएँगे, महीने 2,4,5,7 में आ जाएँगे। यूँ है भी तुम्हारे पास; परन्तु ये आ जाएँगे तो सहज है। बड़े–ते–बड़ा बाइबिल, ये जो बिल्ला है ना, इनमें सब, सारा ज्ञान है बिल्कुल ही। कोई से भी बकवाद करने की या करने की दरकार नहीं है। मोस्ट वैल्युएबल चीज़ है।

मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।